34/5/2/13

नाम : पूनम कुमारी
शोध निर्देशक : प्रो० दुर्गा प्रसाद गुप्त
विभाग : हिंदी, जामिया मिलिया इस्नामिया, दिल्ली

शोध-निष्कर्ष

जनतंत्र की आकांक्षा साहित्य में अभिव्यक्त होती है। हिंदी का दलित साहित्य भी इसी का अनुसरण करता है। यह साहित्य विशिष्ट समुदाय की स्थितियों को लेकर चिंताकुल दिखता है। इस विशिष्ट समुदाय- दलित की भेदभावभावपूर्ण दशा का कारण जन्मना है। यह साहित्य विभिन्न आधुनिक विधाओं में विकसित होता हुआ आधुनिक समाज की स्थापना के लिए गतिमान है।

आत्मकथा, कविता, कहानी, उपन्यास और आलोचना की विभिन्न रचनाओं में एक ही आग्रह स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है। वह है- एक ऐसी समाज व्यवस्था की मांग जिसमें मानव-मानव के बीच भेदभाव, अपमान व तिरष्कार न हो और सभी को विकास और प्रगति के लिए अवसर की समानता हो।

दलित साहित्य में दलित को साफ तौर पर रेखांकित करते हुए अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों को इस श्रेणी में रखा है अस्पृष्यता का सैद्धांतिक आधार हिंदू धर्म ग्रंथों में विद्यमान है। दलित साहित्य पर उठाए गए सभी प्रश्नों के सटीक उत्तर दलित साहित्यकारों एवं उसके समर्थक साहित्यकारों द्वारा दिए गए। दलित साहित्य का आधारभूत कारण सामाजिक और आर्थिक दोनों दृष्टि से शोषित होना है। इसलिए दलित की अवधारणा व्यापक है।

सहानुभूति का भाव ही व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाता है। किंतु सहानुभूति के मनोवैज्ञानिक स्तर होते हैं। दलित साहित्यकारों को हिंदी साहित्यकारों की सहानुभूति सच्ची नहीं जान पड़ती। इसलिए अपने सरोकारों के निमित्त वे अपनी अभिव्यक्ति को अनिवार्य मानते हैं। इसके लिए उनके पास ठोस तर्क मौजूद हैं।

दलित साहित्य अतीत पर रुदन नहीं है। यह दलितों में बने प्रगतिशील मध्यम वर्ग से उत्पन्न हुआ। बुद्ध, कबीर, फुले और अम्बेडकर की वैचारिकी इसका आधार है। यह साहित्य अतीत और परम्परा का तर्क की कसौटी पर पुनर्पाठ करके वर्तमान के लिए उससे सबक लेता है और उसके नकारात्मक पहलुओं का पुरजोर विरोध करता है।

दलित साहित्य में विकसनशील जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और गतकालीन मूल्यों की आलोचना स्पष्ट देखी जा सकती है। यह साहित्य उन सभी अधिकारों की आकांक्षा के लिए सक्रिय है जो मनुष्य होने के नाते उसके लिए आवश्यक है। विभिन्न रचनाओं में यह तथ्य बखूबी रेखांकित हुआ है। इस साहित्य के सर्जकों की चिंता गरिमापूर्ण, न्यायसंगत और समता आधारित समाज की स्थापना करने की रही है। इस विचार एवं भावना को विभिन्न विधाओं में बारीकी से उकेरा गया है। इस साहित्य में जनतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने के प्रयास अभूतपूर्व एवं नवीन हैं।
अतः यह साहित्य मौजूदा परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है।